सम्पादकीय

विश्व गुरूदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का सप्तम पुष्प आपके कर कमलों में देते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। नियमित विद्वानों द्वारा भेजे जा रहे शोध लेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों की सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

इस शोध परक पत्रिका में इतिहास से प्रारंभ होकर वर्तमान तक सब कुछ इस अङ्क में मनीषीयों द्वारा वर्णित कर दिया है।

भारतीय विद्या मनीषी पं. अनन्त शर्मा जी ने ''आयुर्वेद विश्व विभूती वेद'' में आयुर्वेद की प्राचीनता से प्रारंभ करके समस्त सृष्टि की उपयोगिता को सिद्ध किया है।

भक्तिभाव के मनीषी गौड़ साहब ने ''रामचरित मानस में गुरू महिमा'' का अद्‌भुत वर्णन किया।

डॉ. वत्सला जी ने वाल्मीकि रामायण में वर्णित सीता जी की सशक्ता को वर्तमान महिलाओं के लिए अनुकरणीय बताया है, वहीं सोलह संस्कारों का अद्‌भुत वर्णन कैलास चतुर्वेदी जी ने किया है। आगे संस्मरण में रोचक कहानी बुआजी अतीब मनोहर है। हिसाब कविता के साथ ललिता जी ने वर्तमान को जीवन्त किया है। और इस समय की चल रही महामारी 'कोरोना-१९' को महावीर जी ने वर्णित किया। ये अतीत से वर्तमान का साङ्गोपाङ्ग वर्णन इस अङ्क की रोचकता को और बढ़ा देता है।

इस अंक में प्रकाशित समस्त लेख प्रबुद्ध विद्वानों का एक संगम है। आशा है सुधीजन इस ज्ञान गंगा का पान पूर्ण मनोयोग के साथ करेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक